International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# "जम्मू एवं कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद की समस्या दशा एवं दिशा का अध्ययन"

**विमलेश**

Assistant professor

शिक्षा विभाग

डा भीमराव अम्वेडकर जन्म शताब्दी पी जी कालेज धनसारी अलीगढ

आजकल सभी भारतीय चैनलों और समाचार पत्रों में कश्मीर छाया हुआ है, टीवी चैनल सरकार के अनुरूप विशेष रिपोर्ट दिखा रहे है और समाचार पत्रों में कश्मीर पर लेखों की बाढ़ आई हुए है, ऐसे में इस समस्या पर अपने विचार रखना बड़ा मुश्किल हो जाता है, क्योंकि इस मुद्दे पर लिखे जा रहे लेख दो विचारधाराओं में बँटे हुए है और आप जब इस मामले पर कुछ भी कहते है तो दो विचारधाराओं में से एक में शामिल कर लिये जाते हो। कुछ नया कह पाना सम्भव नहीं है, क्योंकि ये समस्या बहुत पुरानी है और इसको लेकर बहुत प्रयोग किये जा चुके हैं। अगर हम 2015 से पहले देखे तो आज की तुलना में जम्मू कश्मीर काफी शान्त था इसीलिये आज के बिगड़े हुए हालात वर्तमान केन्द्र सरकार और राज्य सरकार पर विपक्षी दलों को हमला करने का मौका बन गये है। लेकिन मैं यहाँये कहना चाहता हूँ कि जो भी आज हाल है उन पर अगर राजनीति की जाती है तो देश के लिए बहुत घातक साबित होने वाला है। कश्मीर समस्या बेशक कश्मीर घाटी के एक छोटे से क्षेत्र तक सीमित है लेकिन इसका असर बहुत व्यापक रहने वाला है। आज कश्मीर में जो भी हो रहा है वो अचानक नहीं हुआ है, इसकी आहट 2014 से सुनाई दे रही थी। जिस बुरहान बानी को लेकर कश्मीर की जनता सड़को पर उतर आई है, वो अपनी मौत के बाद हीरो नहीं बना है वो पहले ही सोशल मीडिया के माध्यम से कश्मीरी युवकों के लिये आतंकवाद की ओर जाने के लिये प्रेरणास्त्रोत बना हुआ था। पहले और आज के आतंकवाद में ये फर्क आया है कि पहले विदेशी आतंकवादी ज्यादा थे और आज विदेशी कम है और कश्मीरी आतंकवादी ज्यादा है। एक आतंकवादी की मौत पर आम जनता का सड़कों पर उतर जाना आज की कश्मीर समस्या की गम्भीरता को दर्शाता है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर जो लोग कश्मीर समस्या को एक अलग रंग दे रहे है उन्हें सावधान होने की जरूरत है। यहाँ धर्म, जाति और वर्ग की लड़ाई नहीं है यहाँ तो अलगाववाद ही लड़ाई है। हर तरह की आजादी और खैरात के बाद भी कश्मीरी देश से प्रेम करना नहीं सीख पाये है क्योंकि कश्मीर के लोग हमारे साथ विदेशियों की तरह व्यवहार करते हैं। हमें इण्डियन और खुद को कश्मीरी बोलते हैं। आप देश के दूसरे हिस्सों में जाये

तो आपको पंजाबी, बंगाली, बिहारी और अन्य राज्यों के नाम से पुकारा जाता है लेकिन जम्मू कश्मीर इकलौता प्रदेश है जहाँ आप सभी केवल इण्डियन होते है। इस समस्या को वर्षो से पाला पोषा गया हैं इसीलिये इसे एक लम्बे संवैधानिक इलाज की जरूरत है ना कि किसी तुगलकी फरमान की परन्तु समस्या ये है कि इसका इलाज अभी शुरू नहीं हो पायेगा, समस्या की गम्भीरता का अन्दाजा अभी भी राजनीतिक व्यवस्था को नहीं हैं इसलिये अभी भी ज्यादातर राजनीतिक दल इस समय जारी उपद्रव पर राजनीतिक रोटियाँ सेंकने में व्यस्त हैं। जब तक इस समस्या को राजनीति से ऊपर उठकर खत्म करने के बारे में सोचा नहीं जायेगा तब तक इसका समाप्त हो पाना सम्भव नहीं है। यह उपद्रव कुछ समय बाद शान्त हो जाने वाला है लेकिन समस्या अन्दर ही अन्दर और भी अधिक गम्भीर होती जायेगी। जो भारत देश के लिये अत्यधिक घातक हो सकी है।

जम्मू कश्मीर समस्या का समाधान करने में सबसे बड़ी रूकावट आज पाकिस्तान है, मुस्लिम बहुल होने के कारण घाटी के मुस्लिम समाज में पाकिस्तान के प्रति एक विशेष लगाव है, जिसे नजरन्दाज नहीं किया जा सकता। जब तक पाकिस्तान की दखलन्दाजी इस मामले में बनी रहेगी तब तक इस समस्या का समाधान बहुत मुश्किल है। कश्मीर पाकिस्तान के लिये जीवन मरण का प्रश्न है क्योंकि इसी कश्मीर के चक्कर में पाकिस्तान बांग्लादेश गवां चुका है लेकिन उसे फिर भी अक्ल नहीं आयी। इसी कश्मीर में आतंकवाद फैलाने के चक्कर में पूरा पाकिस्तान आज आतंकवाद से ग्रस्त हो चुका है, लेकिन वो है कि सुधरने का नाम नहीं लेता। भारत और पाकिस्तान के आतंकवाद में एक अन्तर यह भी है कि भारत देर सवेर इस आतंकवाद से निजात पा ही लेगा, लेकिन पाकिस्तानी आतंकवाद उसकी मौत के साथ ही खत्म होगा, जो शायद भारत के लिये और भी विनाशकारी साबित हो सकता है। पाकिस्तान के सीरिया और इराक बनने में अब ज्यादा देर नहीं बची है, लेकिन हमारे लिये समस्या यह है कि पाकिस्तान एक परमाणु शक्ति है, इसका जब भी विनाश होगा, ये भारत का काफी नुकसान करके जायेगा। हमारे हुक्मरान कश्मीर समस्या की जड़ जो धर्म और राजनीति है उसे लगातार नजरन्दाज करते रहे है। अब भारत ही नहीं पूरे संसार की सच्चाई ये है कि आतंकवाद का आधार धर्म और राजनीति बन चुका है, यही कारण है कि इस बार आम कश्मीरी भी अमरनाथ यात्रियों पर हमले कर रहा है। दुख की बात है कि भारत सरकार अब भी इससे इन्कार कर रही है। कश्मीर से हिन्दुओं को बाहर निकाल दिया गया है, आप कह सकते है कि ये काम तो आतंकवादियों ने किया था इसमें आम जनता का कोई दोष नहीं है, लेकिन हमें भूलना नहीं चाहिये कि पंजाब मे लगभग डेढ़ दशक तक चलने वाले आतंकवाद में पूरी कोशिश

की गई कि गैर सिक्ख पंजाब छोडकर चले जाये, लेकिन सिक्खों ने ऐसा नहीं किया और पाकिस्तान की लाख कोशिशों के बाद सिक्खों के ही सहयोग से पंजाब से आतंकवाद का खात्मा कर दिया गया। आज भी कितने ही शरारती तत्व पंजाब में अशान्ति फैलाना चाहते है लेकिन जनता उनकी दाल नहीं गलने देती, इसका एक मात्र कारण है कि कश्मीर का जनमानस धर्म के आधार पर अकेले रहकर ही खुश है, यही कारण है कि आज तक लाख कोशिशों के बाद भी कश्मीरी लोगों को दोबारा घाटी में बसाना सम्भव नहीं हो पाया हैं इसका जबाव शायद ही भाजपा सरकार और मबहूबा मुफ्ती सरकार दे पाये।

कश्मीर समस्या का एक पहलू यह भी है कि कश्मीर को भारत में बनाये रखने के नाम पर यहाँ जबरदस्त मुस्लिम तुष्टिकरण किया गया है, जम्मू और लद्दाख की कीमत पर घाटी को पाला पोषा गया है। कैसी विडम्बना है कि सरकार की हर कोशिश को वहाँ के कुछ गद्दार किस्म के लोगों द्वारा बेकार कर दिया गया है। कुछ मुर्ख लोग बेरोजगारी को आतंकवाद की वजह मानते हैं लेकिन उन्हें यह भी देखना चाहिये कि कश्मीर से कहीं ज्यादा बेरोजगारी और गरीबी भारत के कई राज्यों में है लेकिन वहाँ के युवा हथियार नहीं उठाते। जो लोग बुहरान बानी की मौत पर हंगामा कर रहे है उन्हें पता होना चाहिये था कि उसे एक न एक दिन फौज की गोली का शिकार बनना होगा। हथियार उठाने वालों का देर सवेर यही अन्जाम होता आया है। जो कश्मीरी युवा सेना पर तत्थरबाजी कर रहे है उन्हें पता होना चाहिये कि फौज के पास एक हाथ में पत्थर तो दूसरे हाथ में बन्दूक भी होती है, जब एक सैनिक अपने किसी साथी को मरता हुआ या घायल देख लेता है तो उसके लिये संयम रखना असम्भव हो जाता है। जो लोग सेना पर ऊंगली उठा रहे है उन्हें वहाँ जाकर सिरफिरे पत्थरबाजों का खुद सामना करना चाहिये। अब तो हालात ये हो गये है कि लोग पत्थरबाजी की आड़ में पेट्रोल बम और ग्रेनेड फैंक रहे है। फौज पर हमला करने वालों में महिलायें और बच्चे भी शामिल है ऐसे हालातों में अगर महिलायें और बच्चे भी घायल हो रहे हैं तो फौज को कैसे कसूरवार ठहराया जा सकता हैं। कफ्यू के बाद भी जनता सड़कों पर आ रही हैं। जो लोग कश्मीर के रहनुमा होने के दावा करते है उन्हें जनता को समझाना चाहिये कि भारत एक लोकतान्त्रिक देश है, यहाँ अपनी किसी भी जायज माँग को उठाने के कई बेहतर तरीके है, हथियार उठाने वाले इस देश में कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। जब तक कश्मीर के नेता जनता को भारत से जोड़कर अपनी मॉगे सरकार के सामने रखना नहीं सीखेंगे तब तक कश्मीर समस्या का समाधान मुश्किल हैं। जो लोग आज कश्मीर में आग लगा रहे है उन्हें समझना चाहिये कि ऐसे हालात में कश्मीरी जनता का ही नुकसान होने

वाला है, क्योंकि कश्मीर का सबसे बड़ा रोजगार पर्यटन से जुड़ा है और जो कश्मीर के हालात बन रहे है उससे तो यही लगता है कि कम से कम इस वर्ष तो सैलानी कश्मीर का रूख करने वाले नहीं है। आगे चलकर कश्मीर की जनता को ये दिन बहुत भारी पड़ने वाले है। आतंकवाद का समर्थन जम्मू कश्मीरी जनता के लिये आत्मघाती साबित होने वाला है। बुहरान बानी का समर्थन आतंकवाद का समर्थन है, हैरानी की बात है कि घाटी के मुख्यधारा के नेता भी बुहरान बानी की मौत पर सेना को बधाई नहीं दे पाये थे। कश्मीर समस्या का समाधान तभी सम्भव है जब कश्मीर की जनता भारतीय लोकतन्त्र में विश्वास करते हुए लोकतान्त्रिक तरीके से पेश आये। अगर उनकी कुछ समस्यायें है तो वो सभी की समस्याएं है और सभी भारतीय मिलजुल कर ही उनका समाधान कर सकते है। अपनी समस्याओं के लिए जम्मू कश्मीर वासियों में पाकिस्तान की ओर हमेशा के लिये देखना बन्द करना ही होगा। जम्मू कश्मीर में वर्ष 2016 में, आतंकवाद में शामिल होने वाले युवाओं की तादाद 88 थी, जो वर्ष 2017 में बेतहाशा बढ़कर 126 हो गई। यह पिछले साल सात साल में सबसे बड़ी संख्या है। बुरहान वानी का सफाया होने पर, 2016 के हिंसक गर्मियों के मौसम के बाद आतंकवाद में शामिल होने वाले युवाओं की तादाद बढ़नी शुरू हुई। वर्ष 2010 से 2015 तक, स्थानीय आतंकवादियों की संख्या बहुत कम थी और उन पर ज्यादातर पाकिस्तानी ही हावी थे और उन्हीं का नियंत्रण था। स्थानीय आतंकवादियों की तादाद में यह वृद्धि इससे पहले नब्बे के दशक की शुरूआत में आतंकवाद का दौर आरंभ होने के समय देखी गई थी।

मौजूदा दौर में आतंकवाद में शामिल होने वालों में ऐसे कश्मीर युवा शामिल हैं, जिन्होंने शिक्षा छोड़कर बंदूक उठा ली है, वे बखूबी जानते है कि उनके पास ज्यादा वक्त नहीं है। हाल की मुठभेड़ में मारे गए आतंकवादियों में से ज्यादातर ने महज साल भर पहले ही आतंकवाद की राह चुनी थी। जम्मू कश्मीर पुलिस की रिपोटों के अनुसार हाल ही में जहा एक ओर 16 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण किया है, वहीं उनसे कहीं ज्यादा युवा आतंकवाद में शामिल हो रहे हैं। यह नया रूझान आतंकवाद को एक स्थानीय स्वरूप दे सकता है। इसलिए उमर अब्दुल्ला के ट्वीट पर विशेष तौर पर गौर करने की जरूरत है। अनंतनाग में, हाल में हुई मुठभेड़ की घटना में माता–पिता के बार–बार अपील करने के बावजूद रउफ खानडे ने आत्मसर्म्पण करने से इंकार कर दिया और मारा गया। उसके पिता के मुताबिक, उनका परिवार हिंसा का खिलाफ है, लेकिन 2016 की अशांति के दौरान रउफ की गिरफ्तारी और उसके बाद 45 दिन की कैद ने उसे बदल डाला और आतंकवाद के गर्त में धकेल दिया। आत्मसमर्पण से इंकार करने का यह अकेला मामला नहीं है, हाल ही में

अन्य युवाओं के भी ऐसा करने की खबर हैं। जम्मू कश्मीर के माता–पिता बेबस हो जाते हैं, क्योंकि गुमराह नौजवान यह समझकर आतंकवाद का चोला पहन लेते हैं कि वे आजादी की जंग लड़ रहे हैं, जबकि वह इस हकीकत से अनजान होते हैं किवे ऐसे मतलबी नेताओं के हाथ का खिलौना बन रहे हैं, जो इस बात से वाकिफ हैं कि आजादी केवल ख्वाब ही रह जायेगी। इन नेताओं को पाकिस्तानी डीप स्टेट यानी वहां की सेना और खुफिया एजेंसियों की ओर से शह मिल रही हैं, जो लगातार आतंकवाद के लिए धन मुहैया करा रहे हैं और रास्ता दिखा रहे हैं। जम्मू कश्मीर के पुलिस महानिदेशक ने वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों और अन्य सुरक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों को हिंसा का रास्ता छोड़ने के लिए राजी करें। उन्होंने कहा ''युवाओं की ऐसी मौतें देखना हम सभी के लिए पीड़ादायक है।'' उन्होंने स्थानीय लोगों से भी यह अपील की कि वे मुछभेड़ वाली जगहों पर जाने से बचें, क्योंकि वहां हमेशा घायल होने या मारे जाने का अंदेशा रहता है। यहां तक कि जम्मू कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती भी नियमित तौर पर ऐसी अपीलें करती रहती हैं। ऐसा नियमित अंतराल पर दोहराया जाता रहेगा, लेकिन इसका कोई असर होगया या नहीं, इस पर संदेह है, क्योंकि जम्मू कश्मीर के युवाओं को लगातार बरगलाया जा रहा हैं। हुर्रियत और उसके पाकिस्तानी समर्थक भारतीय सुरक्षा बलों की ताकत से बखूबी वाकिफ हैं। उन्हें इस बात का भी अहसास है कि हिंसा से कोई हल नहीं निकलेगा। वे इस बात से भी अवगत हैं कि बन्दूकों के साये मं पकिस्तान के साथ कभी भी वार्ता नहीं हो सकती। हालांकि पकिस्तान के मार्गदर्शन में तथा भारत को लहूलुहान करने की कोशिश करने की उसकी रणनीति का वे आंखें मूंद कर पालन कर रहे हैं। इसी गलत विश्वास के कारण, युवा उनके आदर्शो की ओर खिंचे चले जा रहे हैं, जिसका अंजाम बुरा होता है। नरम रूख अपनाने वाले, जो समझ चुके है कि यह हिंसा उन्हें कही का नहीं छोड़ेगी, इसलिए वे खामोश रहने के लिए बाध्य हैं, क्यांकि फिलहाल यह आंदोलन कट्टरपंथियों के शिकंजे में हैं। सरकार भी इस बात से अवगत है कि दुनियाभर में होने वाले हिंसक विद्रोहों से यह साबित हो चुका है कि कोई न कोई क्रांतिकारी मोड़ आता है। ऐसा तब होता है, जब यह बात समझ में आती है कि चुने गए हिंसक मार्ग से कभी कोई समाधान नहीं निकलेगा। चाहे फौरन हो या बाद में, लेकिन ऐसा होगा अवश्य।

नरम रूख अपनाने वाले, जो समझ चुके हैं कि यह हिंसा उन्हें कहीं का नहीं छोड़ेगी, इसलिए वे खामोश रहने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि फिलहाल यह आंदोलन कट्टरपंथियों के शिकंजे में है.... कोई भी देश खुद को बांटने की इजाजत नहीं दे सकता, चाहे उसके कितने ही लोग स्थानीय आतंकवादियों के साथ जा शामिल हों। कश्मीरी युवाओं के आतंकवाद में

शामिल होने के पीछे कई कारण गिनाए जा रहे हैं। इनमें मुस्लिम राष्ट्रवाद का उदय, धार्मिक विचार और सुरक्षा बलों द्वारा अपनाई जाने वाली कड़ी सशस्त्र रणनीतियाँ शामिल हो सकती हैं। इनके अलावा, इसका मुख्य कारण हुर्रियत और उसके समर्थकों द्वारा आतंकवादियों को महिमामंडित करना भी हो सकता है। जनाजे में जुटने वाली भारी भीड़, नारेबाजी और समर्थन का प्रदर्शन अन्य युवाओं को भी इसी रास्ते पर चलने के लिए उकसाता है।वे खासतौर पर युवाओं को भड़काने वाले लोग इस बात को समझने में विफल रहे हैं कि उनकी कारगुजारियों से भी कभी भी कुछ भी हासिल नहीं होगा। कोई भी देश, खासतौर पर भारत, चाहे कितना ही अंतर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय दबाव क्यों न पड़े, कभी भी किसी हिस्से को अलग होने या स्वयं को स्वतंत्र घोषित करने की इजाजत नहीं देगा, भले ही आतंकवाद कितना ही प्रबल क्यों न हो और उसे कितनी ही अंतर्राष्ट्रीय सहायता मिलती हो। अंतर केवल इतना ही है कश्मीर का मामला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित है, वह भी केवल पाकिस्तान के समर्थन की वजह से और वह ऐसा लगातार करता रहेगा। नई दिल्ली केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने कहा है कि जम्मू कश्मीर में आतंकवाद की वजह से मारे गए आम नागरिकों की संख्या में पिछले साल तक 166 फीसदी का इजाफा हुआ, जबकि 42 फीसदी ज्यादा आतंकवादियों को भी ढेर किया गया है। मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 2017–18 में कहा गया है कि 1990 में कश्मीर राज्य में आतंकवाद की शुरूआत से वर्ष 2017 में 41 दिसंबर तक कुल 13,976 आम नागरिकों और 5,123 सुरक्षा बलों ने अपनी जान गंवाई है। इस रिपोर्ट में कहा गया है, 2017 में आतंकवाद की घटनाओं में इसके पिछले साल के मुकाबले 6.21 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है साथ ही इन घटनाओं में मारे गए आम नागरिकों की संख्या में 166.66 फीसदी की भी बढ़ोतरी हुई है। इसके मुताबकि 2017 में जम्मू कश्मीर में 342 हिंसक घटनाऐं हुई, जिनमें 80 सुरक्षाकर्मी और 40 आम नागरिक मारे गए, इनमें 213 आतंकवादियों को भी ढेर कर दिया गया। 2016 में आतंकवाद की 322 घटनाऐं हुई, जिसमें 82 सुरक्षाकर्मी, 15 नागरिक मारे गऐ और 150 आतंकवादियों को ढेर कर दिया गया। इसमें कहा गया है कि मारे गए सुरक्षा बलों की संख्या 2.44 फीसदी की कमी भी हुई है। पिछले साल पाकिस्तान की तरफ से भारत की सीमा में घुसपैठ के 406 प्रयास हुए जबकि 2016 में 371 प्रयास किए गए थे, 2017 में घुसपैठ के 123 प्रयास सफल हो गये, जबकि 2016 में यह आंकड़ा 119 का था।

**निष्कर्ष**

दरअसल जिन बड़े जम्मू कश्मीर के बुजुर्गो ने दशकों से हिंसा होते देखी है, उन्हें इसकी व्यर्थता समझ में आ चुकी है, लेकिन वे युवाओं के दबाव में आकर खामोश रहने के लिए विवश हैं। उन्हें अगुवाई करने के लिए प्ररित करना होगा,

जिससे कश्मीरी युवाओं को भड़काने की कोशिश कर रहे लोगों को पीछे हटने के लिए विवश होना होगा और भारतीय संविधान के दायरे में रहते हुए हल निकालने के लिए वार्ता का बीच का रास्ता निकालना होगा। उन्हें ऐसा करना ही होगा, क्योंकि आगे बढ़ने का यही एक मात्र रास्ता है। इसी बीच, भारतीय सरकार इस बात पर विचार कर सकती है कि क्या स्थानीय आतंकवादियों को दफनाने का कार्य उसके परिजनों के हाथों कराना जारी रखना चाहिए, या फिर सरकार द्वारा किया जाना चाहिए, जैसा कि पाकिस्तानी आतंकवादियों के मामले में होता है। इसके पीछे यह दलील दी जाती है कि एक बार बंदूक हाथ में थामते ही वह युवक देश का दुश्मन बन जाता है और उसके साथ वैसा ही सलूक होना चाहिए। इससे आंतकवादियों के महिमामंडन में कमी आएगी, जिसे उकसावे में आकर मासूम नौजवान उनके जैसा बनना चाहते हैं। कश्मीर से ज्यादा हिसंक संघर्षो का हल निकल चुका है। इसका भी निकल जाएगा। यह समाधान एक दिन में या फौरन नहीं निकलेगा, लेकिन आखिरकार निकलेगा जरूर। इस बीच सुरक्षा बलों को अनावश्यक हादसों से बचने का प्रयास करने के लिए सावधानी बरते जब भी जरूरत पड़े स्थानीय लोगों की मदद करने की जरूरत है, जबकि सरकार को विकास के साथ साथ स्वच्छ और ईमानदार शासन मुहैया कराने और साथ ही ऐसे अवसरों को सीमित करने की कोशिश करनी चाहिए, जहाँ मासूमों को भड़काने के लिए आतंकवादियों का महिमामंडन किया जा रहा हो।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वीरेन्द्र कुमार गौड : विश्व में आतंकवाद, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
2. अमर उजाला, दिनांक 25.8.2016 पृ0 10
3. दैनिक जागरण, दिनांक 22.9.2016, पृ0 13
4. हिन्दुस्तान, दिनांक 10.11.2016, पृ0 7
5. के अली, बांग्लादेश ए न्यू नेशन पब्लिकेशन, ढाका, 1982, पृ0 134–176
6. सत्यपाल डांग, क्रास बार्डर, अैरेरिज्म, पंजाब, वी0डी0 चोपरा, सम्पादित राइज ऑफ टेरेरिज्म एण्ड सक्सेसिजन्म इन यूरोसिया, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली, 2002, पृ0 186
7. एस0के0 शिखा, टैरेरिज्म इन दी न्यू, मिलेनियम, आर्थर्स प्रेस, देहली, 2001, पृ0183